आरती – श्रीअम्बाजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी।।
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्त–पुष्प गल माला, कंठन पर साजै।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी। सुर–नर–मुनि–जन सेवत, तिनके दुःखहारी।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर–घाती। धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी तुम कमला रानी। आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ। बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्त न की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता।।
भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती। श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति।।
श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै। कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पत्ति पावै।।